विषय-सूची

१ प्रकाशकीय वक्तव्य
२ वक्तव्य (संकलयिता)
३ डाक का परिचय
४ अर्पण और चित्र (दाताक)

विशुद्ध डाक वचन (सद्धरण ग्रन्थ)

१ व्यवहार प्रदीप से उद्धृत
२ तिथिद्वैध निर्णय ,,
३ ग्रामवास विचार ,,
४ वह्निपत्र विक्रमोर्वशीय ,,
५ प्रकीर्ण नामक ज्योतिष ग्रन्थ

प्रकाशित खण्ड

१	सामान्य प्रकरण	१५
२	गृहस्थ प्रकरण	२१
३	खेती प्रकरण	३२
४	वर्षफल	३६
५	वर्षा प्रकरण	४२
६	गृहस्थधर्म प्रकरण	५४
७	यात्रा प्रकरण	५६
८	अद्भुत प्रकरण	६०
९	ग्रहण	६६
१०	ग्रहण प्रकरण	६६
११	वनस्पति प्रकरण	६७
१२	विविध प्रसङ्ग	६८
१३	प्रकीर्ण	६९

—:※:—

विशुद्ध डाक वचन

-विशुद्ध डाक वचन-

(तालपत्र-लिखित)

राशि-स्वभाव विचार—

मेष मीन तिअ दण्डा दीस,
सा उपरि दिअ पल अठतीस ।
वृष कुम्भ चौदहा मान,
पल एगारह भृगु तिस मान ॥
मिथुन मकर पल तीनि गुनू,
कर्कट सेताईस धनू ।
सिंहहि वृश्चिक सत्तवीस,
तुल सह कन्या पल अठतीस ॥
मिथुना सर्वो मोझे,
मोझे सब पल कहिअ ।
पाँचे दण्डे सभे पल लहिअ ॥

तिष्ठा कर्णा मारता मुञ्जय देवहा तीस ।
ताहे ओढ़े भूमिसुत मास अठारह सीस ॥
जत्ते देवहा चन्दगत तत्ते शनि रवि साखि ।
बारह मास वेहप्फय इति गुनि वृतु काखि ॥

मुहूर्त्त विचार—

तिथि परिमाणह साठि दण्डा, से लए करह बारह खण्डा।
अद्दा मद्दा किलिक मूल, भनइ डाक सबेटा करे चूर॥

सिद्धियोग (तथा च डाकः)—

नवमी चौठि चौदिशि भउ थोड़े,
पड़िव एकादशि छठिक विजोड़े।
तिअ अट्ठमि तेरसि भूपुत्ते,
सओनि दुइ दोआदशि वा उत्ते।
पाँचमि पुनिमा दशमि वेहप्फय,
सिद्धियोग एहु मुनिवर जम्पए॥

यमघण्ट विचार—

जइ रविवारे मघा धनिष्ठा सोमे पुष्य विशाषा(खा)अट्ठा।
मङ्गल कृत्तिक भरणि विरुद्धा, कर पूषफल्गुनी बुध विरुद्धा॥
थारे वेहप्फइ मूल रेवती, शुक्र(क्र)हि बारहि रोहिनि स्वाती।
भवणा शतभिश जइ शनिवारे, एहु यमघन्ट कहिअ गोआरे॥

दग्धतिथि—

रवि सत्ते शुक्र लए दुइ, छठि वेहप्फय होए विरुद्ध।
बुध तीअ दोअसि सूर, मङ्गल दशमी परिहर दूर॥
होए एकादसि सोमेवारे दग्धतिथि फूर कहिअ गोआरे॥
(रवि-१२, सोम-११, मङ्गल-१०, बुध-३, गुरु-६, शुक्र-२, शनि-७)

राहुदय—

पूव्वा दाह पाषाउने (ले ?) अस्स चलन्ते चलइ।
दिस विदिस्से माइ थामे पाछे शुभ कहइ॥
जइ आगोतइ खाइ.....

योगिनी विचार—

पत्ती पचा पासा दूआ, नवे नवे योगिनि हुआ॥
(ई पाठ छपल "डाकवचनामृत" से मेटैछ)

पशुयात्रा विचार (तत्र डाकः)—

तिन्निओ पूव्व मृगसनि रेवेशा-
भरणि विशाष (ख) अशलेस धनिष्ठा।
चालिअ चौपा होइह वृद्धी,
जत्तहि चालिअ तत्तहि सिद्धी॥

द्वितीयोदितचन्द्र विचार—

मच्छाभेड्डा दाहिना अवसरे उत्तर काञ्चि।
धनइव लहा समहिसम अवर चोलि दूणू काञ्चि॥

अष्टदिशा—

पत्त विराड़ा सिंह सुनह अहि मूसा गज मेष।
अचे छले दुहुकरसे गुणि वर गपमान उलेष॥
मेषे गूलें बहुसम्पत्ती गजे विराड़े अतिकर सुद्धी।
नागे सिंहे होइह खेड्डा-सुनहे धरि पछाड़िअ मेड्डा॥

नवान भक्षण (तथा च डाकः)—

अस्सनि रेवए अवर धनिट्ठा
इत्थ आदि कए पाथम खण्डा

एकरा उत्तर दुइ गुरु मन्त्री
कापल परिहइ न करइ अन्ती ॥
संखा सो (ना ?)··· परिहइ रत्ता
वरषा शत एक जीवतु कन्ता ॥
पुष्य पुनर्वसुहुँ सुपरिहरइ रोहिणि पालइ वज्र,
तीनि उत्तर परिहरइ जइ भत्तारे कज्ज ॥

बीजबन्धन-विचार (तथा च डाक:)—

कहुइ भाल कि अस्सनि अपणे
अद्दा रेवए मृगकर मूले ।
मघा सवाती न कर विचार
वाउत सुरुगुरु शुक्रह वार ॥

ग्रामवास विचार—

सेवक रे सुनु गामक वसा,
अक्खर दोगुण चौगुण मसा ।
गामे नामे एक करिज्जइ,
गुनि अङ्के भाग हरिज्जइ ॥
एक सून जओ पावसि चारि,
छाड एलतिहि होइह मारि ।
तीओ पाँचे मान समान ।
वेविछक जओ पावसि ओरे,
सर्वओ विस समप्पिह तोरे ॥

अष्टदिशा—

पक्षी वसुशर पक्ष मजार-
पद् केशरी सुनह सरधारि ।
अहिशर सात इन्दुशर एक,
गजशर तीनि वेरिशर मेष ॥
पक्षि विराड़ा सिंह सुनह-
अहि मूसा गज मेष ।
अपे हले मिलि दुहु करसे,
गुनियर सपमानवशेष ॥

मेषे मूसे वहुसम्पत्ती – गजे विराड़े अतिकर सिद्धी ।
नारी सिंहे होइह सेष्ठा–सुनहे भरि पक्षी तिन्ह भेष्ठा ॥

अपर गौड़ीय प्रकार:—

गामे ठामे नामे आन सोम शुक्र बुद्ध पो (सो) जिआने आन ।
बोलथि डाक एतेओ कपलेप(ख)अलपें काहें किछु अम्पए देख ॥

फलश्रुति:—

अपो कुजे खावए ठाओ गोधन जन नहि बढ़ावए काओ ।
उदये हो वँ वहए अध्य, कदए भरि आन पावए अन्नो ॥
चान्दे बुधे खावए ठाओ तारेहि वसा सम्पत्ति पुपजाओ ।
लच्छी थाकए वा हेरि मेहे, होइ चान्द ठाकि रह पहरे ॥
गुरुदीसा लाभ छाड़िआओ मूलहुँ चोरी बोलए चालए ।
सकुलए नव सञ्चित रत न हरइ नर·····॥

शुकहि दीसा बहए जबे पुत्र परिवार पढ़ावए सबे।
सनि दीसा लाबए पू०.....हाथे आतप लावए दूर॥

अपरञ्च डाकः—

बरगक कर सबे बूझइत आन,
बूझितहुँ बूझितहुँ कर अनुमान।
जोइलि जोए सबिथ कएलेइ,
दाहिन सर बाम कएलेइ...॥
सुन सुन स्वामिको गासक नाग,
जे आह आगर से ने भाग॥

गर्भोत्पत्ति जिज्ञासा (अपरञ्च डाकः)—

अक्खर दोगुण चौगुण मत्ता भाग हरि बूझ जते वेत्ता।
चक्र उज्जारे नाव इकारे एहू धनी फुर कहल गोआरे॥

स्त्री-पुरुष जीवन-मरण जिज्ञासा—

अक्खर दोगुण चौगुण मत्ता भाग हरह ता हरसि नेत्ता।
एक सून जनो पुरुष हल(ण?)हा, बेरि होए जनो तिरि अबिल(ण?)हा

अभीष्ट चक्रम् (तत्र डाकः)—

सिरसत्ता उरसत्ता पिथिहिं देहि पञ्चण (म?) खत्ता।
हाथे दुइ-दुइ पादहि चारि सेवाचक्र कहनो विचारि॥
सिर सम्मानइ देइल दब्ब हीमे वित्त ससम्पद सब्ब।
हाथे देइल पुरबइ आस पिथि (द्वि) हि निष्फल पाओं परवास

अरिपट्टक लक्षण (तत्र डाकः)—

धनु वृष वृश्चिक मृगमानी भरण करा अरिपट्टक जानी।

[ई म० म० हरपति कृत "व्यवहार प्रदीप" मे जे वचन आस मेल अछि ओकर प्रतिलिपि थिक।]

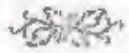

[२]

[१. म० म० महाराज शुभङ्कर ठाकुर कृत "विधिदैव निर्णय" से]

सुलग्नरात्रि विचारे डाकः—तथाच भाषा—

खाती दीआ जो मरए विशाखा खेलए गाए।
अवस ओ नरवर जुझए अश्व महग्घा जाए॥

oooo

[२. "ग्रामवास विचार" ग्रन्थमे आस वचन]

ग्रामवास विचार (अत्र डाकः)—

उत्तरे आगस कहिहे धीर-
दक्षिण कुशल कहए बलवीर।
पूर्व्वे दिशे काब निषेध
पश्चिम दिशा तहिखने पेध॥
चारि चौदीश कह वरुड फारि
छोवइ दरघरि होइइ मारि-
उत्तर दक्षिण कुशल थिर कहवास-
चारू कोन बोल उदास॥

पश्चिम दिशा दूर रवि बोल-
करह काज पिआ होएत अमोल।
भाग्यवासविचार क प्रक्रिया शिवायलि पर आधि।

oooo

[३. तद्विषय-लिखित "मिथिलोर्वली जाल्क" मे प्राप्त वचन]

तस्करोपण विचार—(तत्र डाकः)

पिप्पर पाकवि पपर कॉट-
पच्छिम लोहित फूल नहि आँट।
वायव तेसरि उत्तर तार
ईसानक बदरी परत अकाल॥

oooo

[४. "प्रकीर्ण" नामक ज्योतिष क ग्रन्थ सँ]

अथ युजयोगिनी, क्या या डाकः—

पत्ती पक्षा खसा दूआ नवे-नवे योगिनि हुआ।
अग्नेये योगिनि पचदह उद्धे दह परमान।
वामे दहिने तेरह तेरह नओ सम्मुख कए जान॥

फलमत्र—

अग्नेये योगिनि मार मारकर, पाछे अति सुखदेए।
वामे योगिनि लाभ करावए, दहिने जीव हरिलेए॥

काक शकुन, डाकः—

रवि लाभ [भ] सोम अरु सिद्धि, मङ्गल कलह परवास।
बुद्ध [भ] समागम बन्धु सँ, गुरु पूरए सबे आस॥
शुक्र अभोग··· शनि मरण, काल सन्दफलजीन।
दाहिन दिन अरु वाम गुण, काक वचन परमान॥

वर्षा सुवृष्टिकलए, अत्र डाकः—

फाल्गुन चौदिस सन्ध्याकाल-
वर्षा बूझए वाय विचार।
पूर्वे पुरिआ बहए अनङ्गे-
एक ओ मेघ न लागए अङ्गे॥
अग्निकुमारी बोलए डाक-
भुपे न मरबे परजा भाग।
दक्खिन पवन बहए कनुलाज-
अन्न न उपजए हाहाकाल॥
दक्खिन कोने सब खन बहइ-
अवस सुभिक्ष निरन्तर रहइ।
पच्छिम पछवा बहए अपार
कोदव कुरथी हो बेवहार॥
भण्डार कोन बोलए योइसि-
धोयी धोअए। कूआँ पैसि।
उत्तर पवन सहज जओं बहइ-
भेउरि अन्न मूल लहु कहइ॥
ईसान कोने दुन्दुर बाजए-
सरि साक बसबे उपजावए॥
एतक परए बह जओं वारुयात-
अन दए धरनी अन दए धात॥

चन्द्रविचारः—

मेष सिंह धनु पूर्व्वे चन्द्रा-
दक्षिण कन्या वृष मकरन्दा ।
पश्चिम कुम्भ तुला अथ मिथुना ।
उत्तर कर्कट वृश्चिक मीना ॥

अथ यात्रायात्रायां डाकः—

अश्विनि गमन कहए शुभ सिद्धी-
भरणी गेल न जिव अबुद्धी ।
किर्तिक कापक लन्तइ दिज्जइ-
रोहिणि गमन मनहिमन खिज्जए ॥
मृगशिर गेल रभस चढ़ाएए-
अहा गेल पलटि न आवए ।
पुनु पुनु सिद्धि पुनर्वसु गमने-
पुष्यहि लेखि की लेपब गमने ॥
गज असरेस पइस कलेसे-
मघा गेल भर यम केरे ।
पूर्व्वा फल्गुनि कज्ज न सिज्झइ-
तिअ उत्तर तुर यम पाशहि बज्झिअ[इ?] ॥
हस्थहि हस्त कहओ सम्पत्ती-
चित्रे चलइ न परइ विपत्ती ।
स्वाति सोआती जाएत जाँहा-
भरत विशाषाँ जाएत कहाँ ॥

अपस ओ काज होइह अनुराधे-
जेट्ठा पेटु भरए बँधाइ ।
मूल मूल किचइ गुण पाइअ-
पूर्व्वाषाढ़ पलटि न आइअ ॥
श्रवणा गेल कि सुनिअ अथ श्रवणे-
असुभफल होइह धनिष्ठा गमने ।
शतभिष हो जओं दैव पसन्ना-
रेवए रमए होअए बहुधन्ना ॥
पड़िवा नवमी मूल शनि श्रवणा-
पूर्व्वें दिशि नहि सिज्झए गमना ।
पञ्चक अश्विनी वान गुण तेरह-
एहि दिवस जनु दक्षिण हेरह ॥
रवि छट्ठि चौदसि रोहिणि पुषा-
पश्चिम गमने होइह दुक्खा ।
कुज दुइ दशमी जओं……होअ-
हत्था उत्तर गमने अवस्था…… ॥
अद तिअ सोमे अनन्दए उच्छए-
चौरए अवसि बुध नहि लच्छइ[ए?] ।
अक्के सप्तमि वायव नट्ठः-
डाक कइ कुहइ सफट्टा ॥

बीज पवन विचारः = तनडाकः =

कृषिकाज बोआर मानव-
चारिकाज अठदास वपा (खा) नव ।

पूर्व्वें नर्वें अनाइचि कोणे-
दक्खिन किञ्चित् नैर्ऋत सोने ॥
पच्छिम लाभ कोण पलङ्ग-
उत्तर देय बहुत सुखरङ्ग ।
ईशान कोण दैवसे जाए-
सगुनक देल सबे केओ खाए ॥
शुक्र धान शनीश्वर अरु पोड़-
मङ्गलवार विआ हो बोड़ ।
रवि अनाइचि सोम पदद्धा-
बुद्ध (ध) बृहस्पए बाउग कँहा ॥
[बाउग रोपन बोलन हरठाठ ? ।]

—अथ प्रकाशित खण्ड—

मङ्गल वचन

गिरजा गिरा श्री गोविन्द गणेश,
सकल काज मे सुमिरौ गिरिजेश।
पाँच गफारैं बिना नहिं होय।
कहयि 'डाक' ई बुझु सब कोय ॥१॥

अथ सामान्य प्रकरण

तिथि नाम ज्ञान वर्णन—

पड़िवा षष्ठी एकादशि नन्दा
द्वितीया सप्तमी द्वादशि भद्रा।
तृतीया अष्टमी त्रयोदशि जया
नवमी चतुर्दशि रिक्ता भया॥
पञ्चमी दशमी पञ्चदशी
अमावास्या, कहयि "डाक" ई पूर्णासमा॥

सिद्धि योग—

शुक्रक पड़िवा एकादशि होई,
सिद्धि योग कह षष्ठी सब कोई।
बुधवासर जौं भद्रा पावै,
सिद्धि योग तेहि जग मे गावै॥

—सोलह—

जया तिथहिं जौं मङ्गल होय,
सिद्धि योग मन मानीय सोय।
शनि दिन मे रिक्ता जौं आवै,
सिद्धयोग गुनि जन तेहि गावै।
पूर्णा विधि गुरु वासर जानि,
सिद्धि योग कह "डाक" बखानि॥

निन्दित योग—

रवि मङ्गल मे नन्दिका,
भद्रा मे शुक्र चन्द्र।
बुध मे जया गुरु रिक्ता,
शनि पूर्णा अति मन्द॥

दग्ध तिथि विचार—

मेष कर्क केर षष्ठी होई,
धनुष मीन द्वितीया जोई।
वृष कुम्भ चतुर्थी जान,
अष्टमि कन्या मिथुनहि मान॥
वृश्चिक सिंह दशमी मान,
मकर तुला मे द्वादशी गान।
एहि विधि तिथि कें दग्धा कही,
शुभ कारज सब छोडि रही॥

—सत्रह—

तारा विचार—

जन्म नक्षत्र सँ इष्ट नक्षत्रा,
गणना केरि धरि देखिय पत्रा।
जावत अंक एकट्ठा भेल,
तकरा कें नव सँ भजि लेल।
शेष बाँचय से तारा जान,
कहए "डाक" नाम गुण फल मान।

तारा नाम विचार—

जन्म सम्पत्ति विपत्ति अरु क्षेम,
प्रत्यरि साधक वध सुनु नेम।
मित्र ओ अति मित्र तारा नाम,
"डाक" कहथि फल के धाम।

चन्द्रफल विचार—

जन्म राशि सँ गणना करी,
ओहि नक्षत्रक चन्द्रमा धरी।
यावत अंक आवै ई विधि,
चन्द्र ज्ञान जानी एहि सिधि।
चारि आठ बारह के त्यागि,
शेष चन्द्र शुभ कहिअह लागि।

प्रत्यार्थ धरमे श्येनक समय—

रोहिणि श्रवणा सूर्य्य नक्षत्र
शुभ वासर पैसी देखि पत्र।

कुलिन योग में जन्मक फल—

शनि रवि मंगल तीनू तेजा
श्रवण धनिष्ठा ओ अश्लेषा।
ओहि राति जँ बालक होय,
मात पिता संहारय सोय॥
आप मरै कुल भरि संहार,
राशि सुनीत शोभन के मार॥
लग्नहि कुजा लग्नहि सुता,
लग्नहि होएत भानु तनुजा।
की नर जननी की मर बाप,
की ओ जातक अपनहि आप॥

प्रसूतिक स्नान समय—

अनुराधा अश्विनी ध्रुव हस्ता,
स्वाती पौष्ण नक्षत्रे रास्ता।
कुज रवि गुरुदिन करी नहान,
कहथि "डाक" प्रसूती के जान।

स्तनपानक दिन—

रिक्ता मंगल ओहि के बिष्टी,
व्यतीपात वैधृत अति दुष्टी।
मृदु ध्रुव क्षिप्र नक्षत्रे जान,
कहए "डाक" मातृक स्तन पान।

प्रथम क्षौर (मुंडन) के समय—

नहि गुरु शुद्धि वेद प्रकार,
शुद्ध समय कैं करु ने विचार।
विषम वर्ष उत्तरायण जानि,
चैत छोड़ि शुभवासर मानि॥
जन्म मास के मीजए त्यागि,
ज्योतिष उक्त नक्षत्र लागि।
आदि क्षौर बालकेर होय,
"डाक" कहथि जानब सब कोय।

कर्णवेध—

जन्मक तारा जन्मक चन्द्र,
जन्म मास ओ जन्म महेन्द्र।
दक्षिणायन छोड़ि जानी शुभवार,
सूर्य्य शुद्धि फेर करी विचार।
अश्विनि पुष्य हस्त अरु अभिजित,
मृग अनुराधा रेवती चित।
स्वाती हस्त ओ उत्तर तीन,
विषम वर्ष कर्णछेदक हीन॥
शुभग्रहमे शुभ लग्न सुकाल,
शुद्ध समय लेल "डाक" बेहाल।

खड़ी धरवाक—

सौम्यायन शुभ कालहिँ जानि
पाँचम वर्षमे खड़ी आनि ।
गणपति विष्णु सरस्वतीमा,
पूजन कय शिशु अक्षर कामा ॥

उपनयन—

गर्भाष्टम ब्राह्मण कें काल,
एगारह वर्ष क्षत्री केर साल ।
बारहम वर्षे वैश्य केर बाल,
मनुष्य समय हेतु सबहिं बेहाल ॥
सोलह बाइस चौबीस पर्यन्त,
क्रम सों ब्राह्मणक्षत्रियवैश्यक अन्त ।
वर्ष हानि कह "डाक" सोआर,
पाँच सौं सातहुँ करी विचार ॥
मकर कलस मछली अरु मेष,
वृष मिथुन मे धरु व्रत भेष ।
द्वितीया तृतीया पंचमी शुभवार,
दशमी एकादशि द्वादशि आर ॥
सन्ध्या गलग्रह अन्त्या त्याग,
कृष्णपक्ष सो ग्रहणक भाग ।
गुरु दुतुके शुद्ध करि जानि,
धर्म्मशास्त्र सँ होए मलानि ।

आद्रा श्रेषा जेष्ठा मूल,
रोहिनि उत्तर तीन समतूल ।
मृग चित्रा रेवति अनुराध,
हस्त पुष्य अश्विनि व्रत साध ॥
दिति त्यागि तीनू पूर्व्वा जान,
"डाक" कहथि उपनयनक मान ।
भरनी पुनर्व्वसु स्वाती,
कहथि "डाक" उपनयनक पाती ॥

अथ गृहारम्भ प्रकरण

सोमुख दक्षिण दोष नहिं दी,
कहथि "डाक" एक युक्ति इहो ।
मामा फाल्गुन जेठ अषाढ़,
कन्या बियाही कहथि गोआर ।
रोहिनि रेवति मूल ओ स्वाती,
मृग मघा अनुराधा नाथी ।
द्वितीया, तृतीया पासा एगारह,
तिथि कें उत्तम आनि विचारह ॥
पन्द्रह तीस चौदह औ चारि,
त्यागि मध्यम कह शेष गोआर ।
रवि कुज शनि आसर कें जोड़ि,
अधपहरा भद्रा कें छोड़ि ।

—बाइस—

दग्धा तिथि मासान्तहि त्यागि,
करी विवाह शुभ शुभ कें लागि ।
जो कन्या नहि रहलथा योग,
शुद्ध जानि कर विवाह सुभोग ।

वधू प्रवेशक समय—

करी विवाह दिन सोलह मध्ये,
विषम मास ओ वर्षहि साध्ये ।
हस्त आदि कें तीनि नक्षत्रा,
मघा अद्र युग पुष्य धनिष्ठा ॥
भरणी उत्तर मूल अनुराध,
आनि रेवती वधू प्रवेश साध
गुरु शुक्र चंद शनीचर दीना,
कहथि "डाक" वधु प्रवेसन कीना ।
आठ पाट बारह बुधवार,
तिनहुँ त्यागी कहथि गोआर ।
शुक्र सूर्य्यक दोष नहि लाग,
चन्द्र तार बलहुँ के त्याग ।

द्विरागमन—

विषम वर्ष घट आनि ओ मेष,
मिथुन क रविएँ दूरागमन देख ।

—तेईस—

मृदु ध्रुव क्षिप्र चर ओ मूल,
शुभ वासरमे करि समतुल ॥
रवि गुरु शुद्ध जानि कें कही,
दक्षिण संमुख शुक्र छोड़ि रही ॥
शुक्र पछमे करिअह जानि,
"डाक" कहै छथि समय बखानि ॥

शुक्रास्पता कथन—

रेवती सौं मृगसीरा पर्यन्त,
वाचत दिन धरि चन्द्र शान्त ।
रात दिन शुक्र अन्ध भयजाथि,
वर द्विरागमन करिलें नाथि ॥
संमुख दक्षिण कहथि "डाक"—
संमुख शुक्र पीठ दीश बुध,
ऐहना समयें दैत्यगुरु शुद्ध ।

डीह गुणाक—

करन समान नापि ऊए काठी,
दीर्घ प्रमान नापि कए बाँटी ॥
एके हाड़ दूजे चमार,
तीनें विप्र चौठे शूद्र ।
पाँचे यम छठे क्षत्री,
सातें योगी आठें घुन ॥

—चौबीस—

हाड़ी पहिरावए साड़ी,
चमार लय जाय काढ़ी।
विप्र विधिन आनीयो,
गुरु बहुत धन देयो।
गम पहाँचो रोगी,
सुखी करीयो योगी।
योगी करए अन्नदूना,
घूना करी ओ सूना।

दोहा पर चारुक—

अक्षर दोगुन चौगुन मात्रा,
पूछो कन्या गामक बात्रा।
गामें नामें एक करी,
तासे साते भाग भरी।
बेरि बेरि छठवो पाञ्चह मारे,
गेलो वितल पलट्टे तोरे।
एक शून्य ओं पाथर चारी,
छाड़ह गाम कि होयए भारी।
तीजें भाचे माल समान,
कहथि "डाक" ई गाम प्रमान।

घर सुमधाक—

एक अनेक तीने धनवान, पाँचे होइ पुत फलवान।
साते सहा पदारथ सिद्धि, कहए "डाक" जे पढ़ि कर विधि॥
(पाठान्तर)

—पचीस—

गामें नामें दोह एक करी,
तासे आठें भाग धरी।
घर आइल कनिआह आनि,
ई कहँ अछि "डाक" बखानि॥
पक्षी वसु पञ्च मजार,
पट केसरी श्वान खर चार।
अहिसर सात इन्दुसर एक,
गज खर तीनि मेषु सर मेष॥

वरिमिश्र चक्र—

पक्षिराज केसरि सों सग,
साप श्वान कें दोयर रंग।
गज मजारे छी उत्पत्ति
मेष को मुसहि बहु सम्पत्ति।
पक्षी नाग करय संहार,
घन बिलाइ मूसा के मार।

कोन महक दशा मे वरपनओलें कोन फल—

रविक दशा जों करी घर,
धरनी राजा झगड़ा कर।
सोम क दशा जों करी घर,
दूधे पूते भरी घर।
मंगल क दशा जों करी घर,
घोड़ा घोड़ी मनुष मर।

—छब्बीस—

बुध क दशा जो॑ करी घर,
बेटी बेटें मरय घर।
गुरु क दशा जो॑ करी घर,
अटुट लक्ष्मी आवए घर॥
शुक्र क दशा जो॑ करी घर,
खीर खाँड़ छय भोजन कर।
शनि क दशा जो॑ करी घर,
घर घरनी मरय पर॥
राहु क दशा जो॑ करी घर,
सकल गोद्दी मरय पर॥

पुनः—

रवि कर कहल धन शनिवार,
मंगल मरण कहल गोचार।
बुध ये धन बिहके हो सिद्धि,
शुक्रहिं भोजन हो बहु बुद्धि।
शनि हो रोग शोक ओ हानी,
काल क दर्शे मरण कें जानी॥

कन्या हाथ क एहु कर्त्तव्य—

गृहपति हाथ करब परमान,
जत आकर दीर्घ गुनि आन।
एक छाड़ि आठ सो हरब,
बाँकी रहल से लेखा करब॥

—सत्ताइस—

फल—

एक अनेक विए धनवान,
पाँचे पुत्र होई फल मान।
सोएँ सकल मनोरथ पूर,
कंहइ "डाक" घर एहि विधिकूर॥

सूर्य मंडल, चन्द्र मंडलक विचार

दीर्घ आकर सम जो॑ होइ,
रवि मंडल कह सब कोइ।
मंडल चन्द्र विविध सुख दाइ,
उत्तर दक्षिणे दीर्घ जो॑ पाइ॥
घर आँगन बिनु जो॑ करइ,
पुत्र बिस चिरु समहु के हरइ।
लोहक हस्त ऊँच नहि कीजए,
"डाक" कहथि जे दिनदिन छीजए॥

वास्तु स्नान लेबाय दिन—

आदि भादव पूबे शीश,
दक्षिण पश्चिम उत्तर पीश।
तिनि २ मास विचारि भाग,
वाम भाग सुतधि लाग॥
जत भूमिक घर करी,
शिरम दीश सो॑ छी भागधरी।

दुई भाग शीर दीशक त्यागि,
एक भाग पुच्छहुँ केर लागि ॥
दून भाग जे मध्य मे रहए,
खात कहई "डाक" कहए।
एक हाथ क खात करी,
'डाक' भने पूजा कय मरी।

घर खरवाक वचन—

राजा युधिष्ठिर मन्दिर छाया,
सोलह सहस ऋषि बुलाया।
हे ऋषी हम पूछी सोही,
घर छायम विधि कहओ मोही।
कहहि "डाक" पढ़िया मति साचहुँ,
बस सँ कलह काल जगावहुँ।
दुख दरमीते बहुफल होई,
सकल मनोरथ पुरवै सोई।
तीज त्रयोदशि करिय न वासा,
तापर होबए भोग विलासा।
चौठि चतुर्दशि छाएब छानी,
तापर होयत बालक हानी।
पाँचे सातें तिथि आगाधा,
गाय महिसि धुरन्धर बान्धा।
छठि आवैं छाएब घर जोई,
स्त्री मरय बहुत दुख होई।

नवमी कहए इग्रह व्यवहारा,
सो नर सहओं सदा उधारा।
एकादशी द्वादशी छाएब जहिआ,
ता घर काल भुजंग मरैआ॥
दशो पुरुष की दशो नारी,
सो घर रहिओं सदा उजारी।
कहहि "डाक" जौं तिथि नहि जानी,
ओरिसैं घर बह बेसि गमानी॥
पन्द्रह तीसैं छाएब छानी,
तापर होयत राजा कैं हानी।

घरक समीप अशुभके वृक्ष कथन—

सिमरि सेवरि ओ पुनि तार,
तूवि कूमरि अरु वट विस्तार।
जामून अड़िरी गाछ जौं होए,
"डाक" नाशए पुनि सोए।

शुभाशुभ वृक्षक फल—

सदन समीप नारिअल होई,
गृह बहुत धन पावए सोई।
घर क ईशान पूब ओ पावए,
ताके घर बहु पुत्र बढ़ावए॥
पूरब दिशा आम यदि होय,
धन दायक 'डाक' कहए सोय।

केल पनस बदरी अरु नेहू,
पूरब रहने प्रजा बढ़ धेनू।
इएह सब वृक्ष दक्षिण जो होय,
अन धन लक्ष्मी बढ़ावए सोय॥
जामुन दाड़िम पूरब आशा,
बन्धु बहुत ताके पर गासा।
घर के दक्षिन इएह तरु जो होय,
ताके बहुत मित्रकर सोय॥
दक्षिन पश्चिम पूरी होय,
ताके बहुत हर्ष सोय॥
जो ईशान दीश ई तरु होय,
प्रजा बढ़ए बहुत सुख होय।
चम्पा तरु पूरब जो होय,
अन धन लक्ष्मी बढ़ि होय।
तुम्बीफल अरु कर्कोट,
कुम्हड़ भण्टा सब दिश चारु॥
लता समीप सदन के होय,
कबहुँ दुष्ट बढ़ावए साथ।
वनमेंझार जे होय अनेक,
बिटपने रोपीअ करी सविवेक॥
सदन समीर बिटप वट होय,
धन ताके ताकर नित खोय।

सोई तरु पुनि नगर मझार,
ताहि सुखद कह "ताक" गोआर॥
घर समीप सीमर दुख मूल,
तेतरि नाशए धन केर मूल।
पुत्र नाश करी भीख मँगावए,
सपनो कहिओ सुख ने देखावए॥
सिरिस अशोक कदम्ब सुखदाई
हरदी अवरण परम सोहाई।
हड़ीड़ आओर आमल कीरीऊ,
शुभ वृद्धि ताके घर होऊ॥
आगाँ केदली पाछाँ मान,
वनिता वैसथि मनकि दलान।
पूरुष सूतथि पीड़ा पाछि,
एकसर की कर भुजी विलाछि॥

त्याज्य वस्तु—

गोइफल खाट कटकन छाड़,
नारि कुलच्छनि चाकर चार।
ई चारू कें तुरंत परिहरी,
तुम्हा लागि फकीरी करी॥
शनि रवि फड़की मंगल खाट,
ई तीनू ताकए स्वर्ग क बाट।
कपटी मित्र कौशलिआ माय,
बुद्धिवक बेटा टेटा जमाय॥

—बत्तीस—

कहहि "डाक" आकु परिहरी,
बुड़िचक सन शशुरो नहि करी ।।
महनम सौं भेउ बहिया मरी,
कहथि "डाक" जे सन्तापहि मरी ।।

सत्यैम क प्रसंग—

अवलहुँ मरी बिनु अवलहुँ मरी,
कहथि "डाक" जे सत्यैम करी ।।

॥ इति गुहस्थ प्रकरण ॥

oooo

—खेतीक प्रकरण—

बड़द खेबाक प्रसंग—

घुरि घुरि आ दीपक घर जमा,
बारह वर्ष बड़द रह तहामा ।।
नाहा बड़द चेथि कथ,
दूई धुरन्धर कीन ।।
अपन खेती करि कथ,
आनके मँगनी दीन ।।
नाहा बड़द बहुरिआ जोई,
नाहि घर बसए न खेती होई ।।

—सैंतीस—

हलवक—

जानि न एला रविकर वासा,
लाखो तीनि दियो हरनासा ।

वृषभ विनाश उपजए नहि धान,
पटाएल कि आनन्द किसान ।।

लगना तीनि उपज नहि धास,
बहु विधि लाभ पंच कह आस ।

पलवा तीनि तीनि कहए अनन्दा,
तीनि महादेव सभ सौंपन्दा ।।

करहा तीनि उपज नहि धान,
दौरेक राई ने आन किसान ।।

पड़िया कहे धुरन्धर अठि आठे हर जाय,
चौरह चौठ अमावस अवलो हर बिठाय ।।

सातै पाँचै तिसिया दशमी एकादशि मे जीव,
एहि तिथि हरके जोतिए ताहि प्रसन्न हो शीव ।।

स्वारो हर पू पू तेऊ पुशु चंगु बार कहेउ,
एहुपासा तिथि हेऊ खेती करबाक "डाक कहेउ ।।

बुध बरबार बिहके बीज, शुक्र हर जोतबह नीज ।।

याहि नखत्रा उगै सूर,
तासो आठ परिहर दूर ।
बारहम सोड़हम बीसम चारि,
शेष नखत्रा परिहरि चारि ॥
सर्व्व युक्ति सौं आपन खेत,
उत्तर दीश सैं धरब सचेत ।
बड़दा जोतब ठीक (ठाढ़) कए,
लागन धरब दृढ़ कए ॥

बड़दक चेष्टाक फल

बड़दा मूसे खेत बहाए,
खसै खेत जो बड़द पड़ाय ।
गोड़ा झाड़की मुड़ाझाड़,
तो नहि नीक जो खसै फार ॥
ईसा टूटए सून दो फोर
लागनि टूटए बड़द छए चोर ।
जूअठ टूटए सो शुभ होए
जो पैसे कुदे खादे गोय ॥
तत जानी कृषी भल होय
"डाक" कहै छथि निश्चित सोय ।
खुर सिंह सौं माटी छीए
बहुत सुख की मानहि दीए ॥

खेत जोतबाक—

ऊँचे नीचे करी चास,
भाई भतीजे करी बास ।
से छाड़ि रुए करह पचास,
बड़दे कटसहु बड़दक घास ॥
थोड़क जोतिह अधिक मइयबिअह ऊँच क बन्हिहह आलि ।
जौं खेत तैओ नहि उपजहुँ "डाक" कें पड़िह गालि ।
छोट छोट घर बान्ही चौगरा,
नामे फार जोतनाबी हरा ।
थोड़े थोड़े बेचि क किनथि भाइ,
ताहि घर लक्ष्मी खल खल नाच ॥
सौ छाड़हुँ अस करह पचास,
नीच ऊँच क जोतह चास ।
निनह खेती दोसरक गाय,
जे नहि देखथि तकरे जाय ।
घर बैसल जे बनवथि बाध,
देह मे बल ने पेट मे भात ॥

धान पोएबाक—

पुष्य पुनर्व्वसु पेलिबह धान
मघ असरेसा कादो सान ॥

रोपाक—

काशी कुशी चौठी चान,
आब की रोपबह खेत मे धान।
भारे बीआ बोझे धान,
आधहुँ बैसह घर किसान॥
आषाढ़ रोपी लाभ विधान,
सावन रोपी नविके धान।
भादव रोपी ककोड़ाक धान,
तीनू काटी एक समान॥
बापे पुत्ते करी चास, बापक सुइलें माइक आस।
आनक संगे करी ने चास, नेहो अन्न ने गाभरि बास॥
(इति सामान्य प्रकरण)

वर्षफल

साओन कृष्ण एकादशीक—

साओन कृष्ण एकादशी,
रोहिनि जेतो होय।
तेतो समया जानिए,
कहीं घसए नहि कोए॥
तिथि बढ़ए तो धान नशायए,
नक्षत्र बढ़ए तो धान उपजायए।

तिथि नक्षत्र होएए समतुल,
पुहमी उपजए तुलन तुल॥
कृत्तिक होएतहु कहिमाँह, रोहिनि होए सुकाल।
जौं मृगशिरा आधि पड़ए, पड़ए अचानक काल॥

साओन शुक्ल सप्तमी—

साओन शुक्ला सप्तमी,
छपिकें ऊगहिँ भानु।
तीं लगि मेघा बरिसए,
जौं लगि देव उठान॥
साओन शुक्ला सप्तमी,
रैनि होहिँ नखिहारि।
कहए "डाक" सुन भोंडरी,
पर्वत उपजए सारि॥
कर खेती पिया भवन मे,
होय निचिन्त रहु सोय।
साओन शुक्ला सप्तमी,
रिमिझिमि बरिसए बारि।
सुवहु पिया निचिन्त भय,
बन्हए ने सारिक आरि॥

साओन शुक्ला सप्तमी,
जौं बरिसए घहराय।

ता लगि मेघा बरिसहिँ,
पुहमी धूरि मेटाय ॥
साओन शुक्ला सप्तमी,
छपि कैँ उगथि भानु ।
मूसिन पूछथ मूस सँ,
कहाँ करब खरिहान ॥
साओन पछवा भादव पुरवा,
आसिन बहए ईशान ।
कातिक कन्ता सिकिओ न डोलय,
कहाँ के रखबह धान ।
साओन पछवा बह दिन चारि,
चूल्हिक पोंछा उपजए सारि ॥

साओन शुक्ला सप्तमी, जौँ गर्जे आभाराय,
तौँ आहु पिआ मालवा, हम जाइब गुजरात ॥
साओन शुक्ला सप्तमी, उह उह रैन करन्त,
की अस भेटए गंगतट, की तिय कूप भरन्त ॥
साओन शुक्ला सप्तमी, लुक दय उगए सूर,
हाँकहु पिआ हरवा बरदा, भर्या गेल पड़ी दूर ॥
साओन शुक्ला सप्तमी, निर्म्मल चान उगन्त,
की जल मिलए समुद्रमे, कामिनि कूप भरन्त ॥
साओन शुक्ला सप्तमी, मेघ न छाजए रैन,
कहहिँ "डाक" सुन 'भाँडरी' वर्षा हो गेल चैन ॥

साओन शुक्ला सप्तमी, गगन स्वच्छ जौँ होय ।
कहहिँ "डाक" सुन "भाँडरी", पुहमी खेती होय ॥
कंकड़ भीजहिँ कंकड़ी, सिंह क्यारथ जाए ।
कहहिँ "डाक" सुन "भाँडरी", कुत्ता अन्न न खाए ॥
कंकड़ सुखहि फर्कमे, भीजए सिंह सिआर ।
अन्न महगता मे कहहि, सुन्दर "डाक गोआर" ॥
आदि ने बरिसय आदरा, अन्त ने बरिसय निदान ।
कहहि "डाक" सुन "भाँडरी", किसान होयत पिसान ॥

सोम शुक्र जद बीफे चार,
बुध अमावस पूस मझार ।
खेती कय नर सोयहु जाय,
उपजए अन्न हर्ष महि छाय ॥
रविया रवि सुत ओ अंगार,
पूस अमावस कहत "गोआर" ।
मूल विशाखा अयणा पुरवा,
ई जौँ होय अमावस परिवा ॥
अपन अपन घर चेतहु आए,
रतनक मोलेँ अन्न बिकाय ॥

शाके सम्वत् वर्षा विधा, जोड़ि करी एक ठौर ।
सातक भागे भाजिए, जे किछु बाँचए और ॥
एक छपके सम करि आन, सुन पड़य जौँ काल पलान ।
जौँ बाँचए दूई चारि, महगो अन्न बेशाहे झारि ॥
तीनि पाँच जौँ बचि जाय, माँडिक मोलेँ अन्न बिकाय ॥

पश्चिम बहए तृणहिँ उपजावए,
सम्पति प्रजा बहुत तब पावए।
उत्तर बहए धान्य बहु होई,
ईशान अनावृष्टि कर सोई ॥
शनिवार जौँ रवि परवेश,
धान नाश कर उजड़ए देश ।
मंगल दिवस अग्नि भय होय,
गुरुवारहिँ पुरहितहिँ खोय ॥
बुध परिवेश वृष्टि बहु होय,
शुक्रहिँ अन्न बढ़ावए लोय ।
रवि अरु सोम प्रजा दुख पावए।
परिवेश क फल "डाक" इएह गावए ॥

रवि कुज शनिहो संक्रान्ति, राजा अग्नि चोर भयभाँति ।
बुध चन्द्रहिँ जौँ हो संक्रमन, सस्तीकल्यान शोभीतजन ॥
गुरुशुक्रवासर जौँ हो परवेश, धन्य वृद्धि सौँ "डाक" मकलेश॥
दिनमे मेघ रातिमे तारा, कहए "डाक" जे पर्व गेल मारा ॥
शनि मंगल जौँ हो शिवरात्रि, पछवा बह जौँ दिन औ रात्रि ।
घोड़ा रोड़ा टिड्डीजौँ उड़ए, राजा मरए की परती पड़ए ॥
जाही होवए छेदा बेदा, ताहि जुमाबी गाय ।
ताही होवए दोलाडोली, पुहमी करत लोटाए ।
रवि शनि मङ्गल वारकेँ, स्वाती नक्षत्र जौँ होइ ।
दीप मालिका ताहि दिन, छत्र भंग फल कोइ ॥

गर्भ श्रवण बहु तियकेँ, पर्वतहुँ गिर जाहिँ,
युद्ध उपद्रव बहुत विध, रोग बहुत सब माहिँ ॥
स्वाती जौँ दीआ बरए, विशाखा खेढए गाय ।
नर अथदये जू गर्भेँ, अन्न महर्घ भए जाय ॥
दीप जलए स्वाती दिन, गोधन होए विनाश ।
निश्चय जानहु "डाक" कहइ, नाशय उपजय शास्त्र ॥ पाठान्तर
फागुन पूनो दिवस मे, होली दाह जौँ होय ।
वायु बहन के फल कहइ, परम विचारे सोय ॥
पुरिवा बहए परम सुख पावए, राजा के मन मोद बढ़ावए ।
दक्षिण बहए परम दुखदाइ, उजड़ए प्रजा महगी भहि जाइ ॥
पच्छिम पवन बहए यदि सुन्दर, लगय प्रजा भरिपूर वसुन्धर।
पवन पूर्ब यदि बहए सुहाई, किछु वर्षा किछु रौदी जाई ॥
वायु दक्षिणी धनकर नाश, धान नष्टकए उपजय घास ।
उत्तर पवन बहए झड़िजागिन्न, पृथिवी पानी अनरथ पाड़िअ ।
"डाक" कहए यदि चारु वायु, तृपति प्रजा सब जीव जरायु ।
बहए वायु अकाशे आए, महि सर्वत्र संग्राम कराए ॥
मास अषाढ़ पूर्णिमा गमना, ध्वजा वान्हि के रैखह पवना ।
पूरब सौँ जौँ वायु चलआवय, उपजय धान मेघ झड़िलावय ॥
दक्षिण सौँ बह मलयानील, मध्य समय जूझर बलवीर ।
पछवा बहए नीक कय मानय, अति उल्लास किछुए भय मानय ॥
उत्तर सौँ उपजए धन धान, धान पान सब खाय किसान ।
जौँ ई ध्वजा रहए मझरदा, पड़ए अकाल डोलए सब खपड़ा ॥

बुद्ध राजा मन्त्री कान, अन्नक सुर्यें चलय उतान। (सुवन पाठ)
शनि राजा मंगल मन्त्री, नहिं हो धान ने होयए यन्त्री ॥
एक राशि छओ गरहक भोग, ताहि वर्ष बहु पीड़ा रोग।
कहए "डाक" ई गोक्षक योग, युद्धक कारण इन्हहुँ कौ झोल ॥
चैत त्रयोदशी शनिक भाग, नहिं हो अन्न "डाक" के भाग।
पाँच सूरजहिं मास तुलाय, ताहि वर्षमे "डाक" बजाय ॥
की अति रोदी की अति वृष्टि, की अति क्षय अति मङ्गल सृष्टि।
फाल्गुन मंगल होए पाँच, पुखहु मे पाँच कुवड़ा (१) नाच।
काल पड़ए तेहि सालहि घोर, "भाँड़रि" सुनइ बात गोर ॥

(१) कुबड़ा = शनि

इति वर्षफल

अथ वर्षा प्रकरण

मेघगर्भ

पूसक अन्हरिआ जतदिन मेह, साओन सुदि ततदिन जलदेह।
माघ सुदि जत दिनमे जान, साओन ततदिन वर्षा मान ॥
माघ वदि मे मेघ देखाय, भादव सुदि तत वर्षा आय।
फाल्गुन सुदि जौं बादर देख, फागुन सुदि मे "डाकक" लेख।
चैत सुदि जौं मेघ लाग, आसिन वदि कातिक सुदिमे भाग ॥
जेठ सुदि अष्टमी सँ देख, चारि दिन मन्द वायुक लेख।
गगन सुन्दर घन देखल जाय, मेघमे गर्भ कहतु "डाक" बुझाय ॥

दशतारक

मूल आदि भरणी केर अन्त,
चन्द्र वारतँ गर्भ कहन्त।
कारी घटा गगन मे छाओए,
बहए पवन आ वृष्टि नहि लाओए ॥
आ दशतारक नीक कहाओए,
वर्षा कयकें अन्न बढ़ाओए।
जौं दशतारक वर्षा होअ,
पुहमी पुरि छोटाओए साअ ॥

मास विचार

कातिक सुदि एकादशी, बिजुली मेघ होए।
"डाक" मास आषाढ़ मे, अति वरषा जल होए ॥
शनि रवि मंगलवार कें, कातिक अमावस होए।
आयुष योग पड़ए पुनि, स्वाती नक्षत्र जौं होए ॥
काल पड़ए तेहि देशमे, अन्न, धन, लोक मसाए।
कहल "डाक" सुन "भाँड़री", सुरहु सगुन हएह आए ॥
कातिक सुदि पुनेकें माँही, नक्षत्र कृत्तिक जौं पड़ताहीं।
तादिन हो संयोगहि बादर, पुनि पुनि बिजुली चमकय सादर ॥
मास चारि वर्षा कें सुनह, भलीभाँति वर्षे मन गुनह।
कातिक मास जौं दरसे मेघ, जपदिन डाकर सुनहुँ खेह ॥
सो मेघ बरिसए आषाढ़, सुन "भाँड़री" कहए "डाक" गोआर।

अगहन वदि तिथि अष्टमी, जों मेघ दर्शात ।
जो मेघ साओनि भरि, कहए "डाक" वर्षंत ॥
अगहन सुदि एकादशी तिथि, द्वादश कातिक राति ।
पौष पंचमी आर सुनू, माघ मासमे साति ॥
ईसब दिन यदि मेघ देखी, चारि मास वर्षा अति पेखी ।
पौष अमावस यदि पड़य ,सोम शुक्र गुरु दिन ।
जल बरषय बहु अन्न हो, प्रजा मुक्त हो रिन ॥
पौष अमावस यदि पड़य,शनि रवि मङ्गल दीन ।
"डाक" अन्नमहगी होयए,जलबिनु सलकय मीन ॥
पौष इजोरिआ सप्तमी, अष्टमी नवमी याम ।
"डाक" जलद देखय प्रजा, पूरय सब विधि काम ॥

पौष वदी सप्तमी तिथि माँही, बिनुजल बादल गर्जत आँही ।
पूनो तिथि साओन के मास, अतिशय वर्षा राखहु आस ॥
पौषवदी दशमी तिथि माँही, जों बरषय मेघा अधिकाँही ।
तों साओन वदि दशमी,बरसय, जो मेघ पुहमी बहु बरषय ॥
रविआ रवि सुत जो अंगार, पूस अमावस कहत "गोआर" ।
अपन अपन घर चेतहु जाय, एतनक घोल अन्न बिकाय ॥
पानी बरसय आधा पूस, आधा गेहुँ आधा भूस ।
पौष अमावस तिथि विषम, होयए मूल नक्षत्र ॥
चारु वायु बहए पुनि, सुनहो हओ गृहस्त ।
बाँधो अपनी झोपड़ी, निश्चय हो मनमान ॥
वर्षा अतिशय हो मही, कहए "डाक" परमान ।

माघ वदी सप्तमी के ताहि, जों बिजुरी चमकत नभ माहि ।
माघ बारहु बरषे मेह , मत सोचहु चिन्ता तजि देह ॥
माघ सुदी पक्षिया के मध्य , दुगकय बिजुरी गरजय बढ़ ।
तेल अरु सुरही दिन-दिन भार, महगी होयए "डाक" गोआर ॥
माघ वदी तिथि अष्टमी, दसमी पूस अन्हार ।
"डाक" मेघ देखी दिना, साओन जलद अपार ॥
माघ (१) बरिसय तीनिलय, गेहुँ राय बेमाय ।
माघ द्वितीया चन्द्रमा, वर्षा बिजुली होए ।
"डाक" कहथि सुनहु नृपति, अन्नक महगी होए ॥
माघ तृतीया सूदिमे वर्षा बिजुली देख ।
"डाक" कहथि अओ गहूँम अति, महग वर्ष दिन लेख ॥
माघ सुदीक चौथमे, जों लागय घन देख ।
महगी होयए नारिअल-रहए न पानहि शेष ॥
माघ पञ्चमी चन्द्र तिथि, बहए जों उत्तर वाय ।
तों जानहु भरि भाद्रमे, जल बिनु पृथिवी जाय ॥
माघ सुदी षष्ठी तिथि, यदि वर्षा नहिँ होए ।
"डाक" कपास महगी, मिलय राखए ता नहि कोए ॥
माघक गरमी जेठक जाड़, पहिला पानी भरि गेल ताल ।
कहए "डाक" हम होएब योगी, कुआँक पानीए धोहए धोबी ॥
सोमवार दिन यदि पड़य, माघ सुदी तिथि सात ।
"डाक" नृपति मेह युद्ध ताहिँ, प्रजा काल मुखजात ॥
अन्न महग जानहु हे मीत, माघ मासमे बसय न सीत ।

(१) माघक बदरी तीनि खाए, गाय गहूम बेमाय । [पाठान्तर]

फागुन सुदि तिथि पञ्चमी, शनि मंगल दिन होय।
"डाक वर्ष महगी पड़ए, बीज न छीटय कोय॥
फागुन अमावस मंगलवार, अन्न संयोगे मनहि विचार।
अवस अकाल पड़य तेहि वर्ष, कहए "डाक" सेमहु मन हर्ष॥
सुदि फागुनक सप्तमी, नवमी तिथि अरु अष्टमी।
ता दिन मध्या जौं मेघा गर्जे, तो अकाल जानहु गु सर्वे॥
चैत मास यदि वरुण जाय, नहि मेघ नहि बिज्जु देखाए।
बहए न वायु अँधेरी पाख, ताकर भल इमि "डाकहि" भाख॥
समय होअ शुभ वर्षा होए, राजा प्रजा सुखी सौं सोए।
चैत अँधरिया पड़िवा देख, जौन वार ताकर फल लेख॥
रविवार सौं आँधी बहए, मंगल विग्रह युद्धहि कहए।
बुधवार हो काल जनावय, शनिवार बहु विपदा लावए॥
सरवर नदी कूप नहि पानी, मानुष चौपद मृत्यु बखानी।
हाहाकार सकल दिश जानू, शनिवार के इएह फल मानू॥
चन्द्र शुक्र बृहस्पति वार, दुध अन्न से भरे भण्डार।
चैत्र बदी पड़िवा फल इएह, सुनलहु राजा "डाकहि" कहह॥
चैत्र सुदि अष्टम नवम, वर्षा बिजुली होए।
जा दिशि अइसहु देखहु, ता दिशि काल पड़ाए॥
चैत अमावस पत्रा देखहु, सूर उदय से जे घड़ी पेखहु।
ते ते सेर बिकाहीं भाव, कातिकमे "डाक" बखान॥
चैत मासक दशमी सुदी, बादर बिजुली देखहु यदी।
डाकर फल इएह नीक होए, एहि विरुद्ध फल शुभ लेहु जोए॥

वैशाख

बादर जौं वैशाख मे, देखि पड़य चपरङ्ग।
अथवा मेघा वर्षहीं, चमकए बिजुलीके सङ्ग॥
तो चौमासा वर्षहीं, मेघ मही पर आन।
साओन मे उपजए धनो, नाज अनेक विधान॥
होहिं अमावस जौं शनिवार, अरु रविवारके करहु विचार।
छत्र भंग राजनके होई, "डाक" अचल देखा सब कोई॥
सुदि वैशाख एगारह बारह, अरु तेरह जौं बादर छारह।
अरु बिजुली चमकए बहु ताहि, राज उपद्रव हो महि माँहि॥

जेठ मास अँधियारी पाख,
ता मह पड़िवा कर फल भाख।
चैत मास पड़िवा फल जइसन,
"डाक" कहए गहु केर फल तइसन॥
जेठ बदी दशमी तिथि देखहु,
शनिवार के जौं इएह लेखहु।
वर्षा पुहमी पर नहि कोई,
विरले जगमे जीवए कोई॥
पौस बदीमे मेघा भभकय,
अरु बिज्जू ता मे चमकय।
बरस बीच चौपद बहु मरहीं,
"डाक" एकर फल अएसहु भएहीं॥

सूर्य आसा जहि ठाम, जेठ अमा सन्ध्या समय।
राखहुँ मनमे ध्यान, जेठ सुदी दुतिया तक्क॥
दुतिआ के चन्दा बाए; रवि ते पश्चिम मन्द।
उत्तर ऊँचो होइकेँ, दक्षिण नीचो चन्द॥
उत्तम फल जाकर लखो, समय होई अति नीक।
दक्षिण ऊँचो अह उत्तर, बीच "डाक" नहि ठीक॥
जेठ पूर्णिमा दिन मे, पछी छोड़ए धूर।
कहए "डाक" तेहि वर्षमे, वर्षा हो भरपूर॥
जेठ पूर्णिमा रातिमे, मेघ भयानक होए।
किछु किछु पछवा संचरए, महावृष्टि कर सोए॥
जेठ सुदि गुरोया माँहि, आद्रा ऋक्ष मेघ वर्षाहिँ।
तेँ दुर्भिक्ष पड़तह एहि साल, कहए "डाक" हो प्रजा बेहाल॥
माघ अन्हरिआ सप्तमी, घन बिजुली दमकन्त।
द्वादश मास बरषय जलद, अदा कटा बहुसन्त॥
जेठ मास जेँ सूर्य तपावए।
तप्त वायु बहु रजहिँ उड़ावए।
घनहु मेघ वर्षए नहि माहिँ,
जेँ पृथिवीमे नहि समाहिँ॥
जेठ मास जेँ तपए न सूर,
शीत माघमे पड़ए न पूर॥
उपज थोड़, थोड़ जल होई,
कहत "डाक" मानहु सब कोई॥

आद्रादिक दशऋक्ष, जेठ सुदी मँह जेँ तपए।
तेँ भागय दुर्भिक्ष, चारहुँ मास वर्षए घनए॥
जेठ अन्हरिआ शनि दिन, जेँ न साझमे होए।
पानि न बरिसए मही पर, "डाक" न कीबए कोए॥

आषाढ़

यदि आषाढ़के प्रतिपदा, यदि मेघा गर्जन्त।
पृथ्वी पर मानव लड़ए, निश्चे काल पड़न्त॥
अपर बगल आषाढ़, तकर बारह मास।
आषाढ़ यदि एक आकाश, गरजय विद्यु वायु प्रकाश॥
तेँ खेती करहु मति कोई, साओन भादव सूखा होई।
रोहिन हो दशमी तिथि माँही, तब ही सरवा धान बिकाही॥
सुदि आषाढ़ दुख के, शुक्र उदय यदि होए।
होय अस्त साओन विषय, महा काल पड़ितोए॥
साओन बहए पुरबैआ, मेघ बरसा कीनह नैआ।
चौठ अन्हरिआ माझान माँहि, जेँ महिपर मेघा वर्षाहिँ।
पेतालिस दिन घन बरसए, साख सवाई बढ़ए धन हरषए॥
साओन पञ्चमी बरिसए मेघ, चारिमास वर्षा निज नेह।
सबे सोहावन हर्षित गेह, "डाक" कही नहि किछु सन्देह॥
साओन अमावस परहि जेँ, सामवार मे आए।
उपज अन्न हो थोड़हि, हाहाकार मचाए॥
कहुँ बरिसए कहुँ सुखहि, मरए जगत बहु लोग।
फला जाकर कह "डाक" इमि जएसे ज्योतिष योग॥

भादव सुदि पञ्चमी माँहि, स्वाती रिक्ष संयोग हो जाहि।
दोऊ शुभजग मङ्गल करए, सुखी लोक सब कर दुख टरए॥
भादोमे भरणी जब होइ, घटाटोप मेघा नभ छोइ।
तब जानहु वर्षा सब देश, "डाक" सुखी जन मिटय कलेश॥
आश्विन अमावस हो शनिवार, खरवर समय होए विचार।

दक्षिण लौकालीकहिँ, उत्तर गरजए मेह।
कहहिं "डाक" सुन "भाँडरी" ऊँच कय फिल्लादह॥

मेष सिंह धनु अग्नि करए वृष, कुम्भ कन्या माटी भिजए।
मिथुना तुला वह पवना, कर्क मीन वृश्चिक जल भरना॥
कार्तिक द्वादशि मेघादिशए, ताहि दिशा आषाढ़ बरिसए।
अगहन पँचमी मेघ घटा, भरि सावोन कीन मेटा॥
पूस अमावस मेघाकार, बरिसए भादव धोआँ धार।
माघक सातमी मेघ बदरिया, चाह मास बड़सल धरिया॥
ई सब जौँ एको न देखय, मेघ रसातल मे चल जाय।
कहहिँ "डाक" सुन "भाँडरी", मानुष कुपहिँ पैसि सहाय॥
जौँ मेघा जल बरिसए स्वाती, तौँ लहीन पहिरय सोनाक पाती।
येह विहित नहि होयए आन, तुल बिना नहि फुटए धान॥

सुख सुखराली देब उठान, तेकरे तेरहे (१) करह नवान।
तेकरे तेरहे खेत खरिहान, तेकरे तेरहे कोठी धान॥
पानी बरिसय आषहिँ पूस, आधा गहुम आधा भूस।
माघक गर्मी जेठक जाड़, पहिला पानी भरिगेल माल॥
"डाक" कहथि जे हम होयब योगी, कूपक जलसँ धोएत धोती।

(१) बारहेँ (पाठान्तर)

जौँ पहिले वैशाख मे जल, काँसुआहिँ होयतहु दागुन फल।
भादव चारि जो आसिन चारि, अन्त आदि आठ जोड़ी निचारि।
कहए 'डाक' कराओक अपन, काठी भरि भरि राखन अपन॥
जा धरि रहथि वीच्छक सूर, ता धरि रविअह बन मयूर॥
शनि रवि मंगल हो शिवरात्रि, हहहह पछवा बह दिन रात्रि।
नदिआक तीरे तीरे करिअह चास, तकरहु राखिअह थोड़वे आस॥
पछवा बहिके बरिसए शीत, ऊँच जोति कए सुनहु निचिन्त॥
पाँइल पवन पूरब जौँ आय, बरिसँ मेघ आसि महो तलाव।
चमके पश्चिम उत्तरा ओर, तौँ जनिअह वर्षा हो जोर।
पश्चिम दिश जौँ हरिअर मेह, चमके बिजुली थामुक नेह।
वर्षा होअए मूसल धार, सात दिन धरि 'डाक' गोआर॥
जौँ देखी फोड़रिकहा मेह, ताहि बीच मे जातक नेह।
आय खेतमे बान्ही आरि, "डाक" कहै छथि समझ विचारि॥
ने जोहि दिन त मास दिवस, वर्षा होअए अधिक अवस॥
पश्चिम धनुष होअए सुखा, पूरब देखाअय जल लय आवय।
दूर माँडरि लग जल, लग देखलेँ गेल रसातल।
चैत भर बर वैशाख पाथर, जेठक राति आकाश चकचक कर।
भद्रितहिँ वर्षा मेघवा झर, कहए "डाक" ऊँच ऊँचकेँ घर घर॥
चन्द्र भाँडरि मे देखी तारा, वर्षा होअए मूसर धारा।
इन्द्रधनुष जौँ पूबहिँ देखी, नीच ऊँच मे एके होखी।
जे दन हो रोहिन परवेश, पनपति इन्द्र धर्म चलेश।
जल परित घट रोहिनि परयन्त, कहए "डाक" फल कही तुरन्त॥

धनपति जल जौं पूरन देख, 'तरि सावन जल वर्षा लेख।
जल खाली तब वर्षा थोड़, खाली बपले मूह मिरोड़॥
पूर्व दक्खिन पश्चिम घट जल, भादव आसिन कातिक फल।
आसन हो नहि आवर किए आस न दीन्हें हस्त।
ई दूनू सबहिं गए पण्डित का गिरहस्त॥
माघ उत्तम वैशाख साज, पहिले वर्षा भरि रेल जाइ।
बोवी धोनए कृषमे पैसि, कहए "डाक" देहरि पर बैसि॥
जेठ पूर्णिमा दिन मे वर्षा कोटए धूर,
कहथि "डाक" तेहि वर्षमे वर्षा हो भरिपूर।
जेठ पूर्णिमा रातिमे मेघ भयानक होअ,
किछु किछु पछवा सञ्चरए महाकुष्टकर साअ॥
जेठ लपए, अषाढ़ नपए॥
शुक्लपक्ष जो नवमी के वार, मास अषाढ़क कहओ विचार।
भोर कड़ी सुखा करबाअए, पहर तेसर धान कहाअए॥
मध्य कड़ी धान उपजावए, सूर्योदय मारी दिखलावए॥
पीछे शुक्रक बादरी, रहए शनीचर कृष्ण।
कहए 'डाक' सुनू 'भाँडरी' बिनु वर्षे नहि जाय॥
शनि सतहिया रवि बसहिया॥
अषाढ़क पछवा सोना बहए, सीक डोले मही भरए।
रोहिणि छव्वए मृगशिरा लव्वए, आर्द्रा देख भुसुआए॥
कहए "डाक" सुनू सज्जना, कुकुरो अन्न नहि खाए।
धान-पान के नित्य स्नान, कहए 'डाक' ई निश्चय ज्ञान॥

अषाढ़ नवमी शुक्ल पक्ष, की कर पण्डित लेखा जोखा।
बरिसए मेघ जौं भूमर धार, भाँगि समुद्र मे बगड़ा पार॥
जो मेघ बरिसए फुहाँफुही, मध्य वृद्धि हो 'डाक' कही।
मन्द मन्द जौं बरषन कर, अन्न वृद्धि सों पहुमी भर॥
सिहक माथे पछवा बहए, तकरहु मनमिलह उर।
कहहि डाक' सुनू 'भाँडरी' कैच कय बान्हह घर॥
जो असरेसा गुणकी लावए, भया निरावे नाह पावए।
जौं पूरवा पू बैआ पावए, सुखले नदिआ नीर बहावए॥
साओन पछवा भादव पूरवा आसिन बहए ईशान।
कातिक कन्ता सिकिओ नहि डोलय कहाँक रखबह धान॥
सावोन पछवा यह दिन चारि, धन्हिक पाछों उपजए सारि।
बरिसे रिमझिम निशिदिन वारि, कहि गेल 'डाक' वचन परचारि॥
साओन पूरिया भादव पछवा आसिन बहय नैर्ऋत।
कातिक कन्ता सिकिओ न डोलय, उपजय नहि भरि बीत॥
साओन पूरिया यह विकरार, कोदो मडुआक हो व्यवहार।
खोजक भेटय नहि थोड़ो अहार, कहत बैल इएह 'डाकगोआर'॥
जौं साओन पुरबैआ बहए, शाली लागु करीन।
भादव पछवा जो बहए, होंहि सकल नर हीन॥
साओन बह जौं बहदहासा, बीआ काटि करह गे घासा॥

॥ इति वर्षा प्रकरण ॥

अथ गृहस्थधर्म प्रकरण

पथन—

मंगल के जो आरे पारे, केश कटावी कहि गेल गोआरे।
शनि मंगल के आरे पारे, केश कटावी कहिगेल गोआरे॥
केश कटावी आपे पूछ, नहि कटावी आपे पूछे॥
सहिखन भेटए नाउ, सहिखन केश कटाउ॥

नव वस्त्र परिधान—

कपड़ा पहिरी तीनि दिना, बुध बृहस्पति शुक्र दिना॥
शनि आरए रवि काइए, सोम करए सुखाइ।
‡ मंगल मारए जीव सों, शुभ पहिर घर जाइ॥
नंगटे पहिरी भुख सों आइ, जहाँ मन आपए तहाँ जाई॥

नखान—

पूर्वार्द्ध बीच राशि मे पाप, माघ फाल्गुनक शुक्ल सोहाव॥
१। ६। ११। १३॥
कृष्णहुँ मे पंचमी धरि होअ, नन्दा त्रयोदशि छाड़ए सब कोअ।
सुन्दर तिथि, शुक्रा छोड़िवार, सदुचर क्षिप्र नक्षत्र आधार॥
जन्मक तेसर तारा हरिशयन; धनु तुल मे नहि करी नखान॥

‡ ज्योतिष के "आयुष्मान् कृपाकरः" वाक्य नहि तें मंगलकें दोष नहि थिक, जो शास्त्रसेवी के रवि कें दोष नहि थिक।

—पचपन—

नव वस्त्र—

† सुतब उठब पाँजर मोड़ा, ताहि बीचमे अन्नक छौंड़ा।
राजाक बेटा रामलाल, आठ नवौमे 'बाक' नेहाल॥
बतहाक चौदह बतहीक आठ, अन्न त्यागिकए जीवन काट॥

मन्त्र ग्रहण—

जेतहिँ दुःख वैशाखमे सिद्धि, जेठ मरण आषाढ़ बन्धुनाशकवृद्धि।
सावोन पुत्र भादव दुःख देह, सर्वसिद्धि आसोन कातिक ज्ञानदेह॥
अगहन शुभ पूस ज्ञानक नाश, माघ मेधा फागुन चित्तव प्रकाश।
कृष्णपक्ष पञ्चमी परमन्त्र, एहि सें आगाँ वांछित अन्त।
शुक्लपक्ष मे प्रत्यक्ष सिद्धि, शुभकारक कृष्ण कहओ वृद्धि॥
दु ती पा सा दस एगारह, कहथि 'बाक' ओ तिथि ओ बारह।
रिक्ता तिथि कें छोड़बे करी, शेष तिथि अध्यम मानि धरी॥
अश्विर मृग चित्र अनु ओ रेव वसु नक्षत्रें मन्त्र अथ लेव।
शनि कुज छाड़ि सुन्दर शुद्ध काल, चंद्र तारा बल शिष्य बेहाल॥
सुन्दर दिन मे गुरु प्रति आय मन्त्र लेथि कह 'बाक' बनाय।

मैत्री—

पुष्य चन्द्र मित्र भाग नक्षत्र, द्वादश मे शुभ वार मित्रत्व।
अष्टमी तिथि थिर होएब लग्न, मैत्री करलें हो नहि भग्न॥

॥ इति गृहस्थधर्म प्रकरण ॥

† सुतब = हरिशयन, उठब = देवोत्थान, पाँजरमोड़ा = पार्श्व परिवर्तन, रामनवमी, जन्माष्टमी, शिवरात्रि, महाष्टमी।

यात्रा प्रकरण

बुधवार मंगलवार पुरुवार ककरा, कौन दिन कौन मुंह करवह जतरा।
भद्रा के नहि जाति ने पाती, दक्षिण उत्तर दुपहर राती॥
पुरब गोधुली पश्चिम उषा, कहहिँ 'डाक' जे सुनहिँ सुसा।
शनि रवि मंगल को गुरुवार, दक्षिण पवन करय संचार॥
सोमे शुक्रे बुधे वाम, एहि विधि लङ्का जीतल राम।
शनि मंगल भोजन कय चलवह, गेलहु लक्ष्मी पलाटि कए अयवह॥
सोमे बुधे शुक्रे उषा, द्वादह जोतिषी लेखा जोखा।
जोइ स्वर चलए सोइ पद दीजय, कानहु सँ एक अक्षर छीजय॥
पड़िवा नवमी शनि सोम अवधा, पूरब दिशा नहि करिअ गमना।
अश्विनि पञ्चक वाम गुरु तेरह, ई सब बाति दक्षिण जनि हेरह॥
रवि छठि चौदसि भरणी पुरुख, पश्चिम के थीक इएह मह दुरुख।
कुज दुज दशमी बुध ओ हस्ता, उत्तर गमने भरय अवस्था॥
कहहिँ 'डाक' गमन ने करी, नाशाहिँ प्राण कोटि विधि धरी।
रवि मूले जे पाती अङ्का, सोमे भरणा बजाती डङ्का॥

गमन काल जौँ वाम दिश, श्यामा बोलए भूप।
गाइ सूर अरु सर्प के, दर्शन परम अनूप॥
पुर पहतर जौँ वाम से, तीसर दक्षिण जाय।
कहय 'डाक' शुभ सकुन इएह, मिलिहैँ सब मन भाय॥

वाम भाग मे बोलए गीदर मन वाञ्छित फल पावहुँ शीघर।

सनुख दहिन जौँ बोल सियार, महाअशुभ कहए 'डाक' बोआर'॥
निशा रात्रि चहुँ दिशि जौँ बोलए, अशुभक द्वार तुरन्तो खोलए।
रागी रीछ सुनारक दर्शन, वामहि भलाल दाहिन प्रशन॥
नीलकण्ठ केर दर्शन होए, मन वाञ्छित फल पावए सोए॥

बोलए खरहा वाम दिश, मीठो बैन सुनाय।
फल यात्रा सब शुभ कहो, अन्न धन देहि मिलाय॥
दाहिन बोलए भय करे, आगे रोगहिँ नाश।
पीछे बोलए गमन कर, तेजहुँ मन से आश॥

प्रात समय मृगा बाएँ सँ, दाहिन बाइस सौँ हरसए।
साँझ समय दाएँ सँ धाए, मन वाञ्छित फल निश्चय पाए॥
दहिना लौंग पक्षी विशेष, दाहिन प्रशन पुण्यहि लेख॥
वाँछित फल सञ्चरण सब पावए, कहत 'डाक' इएह फल मनभावए।
चकुल मोर दर्शन शुभकारी, 'डाक' हे सज्जन लेहु विचारी॥
कोकिल मुर्गा सुग्गा कहो, चौथे मैना सुनहुँ ऐ सही।
बाएँ बोलए जो शुभ होई, 'डाक' कहए मनमे लेहु जोई॥

गमन काल मे श्वान यदि फटफटाय कान।
'डाक' कहथि जे प्राण बचए सूकर एवचे मान॥
मानव महिष मजार द्रव श्वान युग्म जो कार।
कहव देख यदि मार्ग मे 'डाक' कहथि तोँ फाँर॥
विप्र तीनि पुनि क्षत्री चारि शूद्र एक रस संख्यक नारि।
'डाक' वचन मन ई सुन धारि वैश्य दुई भाएहुँ सोँ भारि॥

दहिना = दही। लौंग = लवङ्ग।

यात्रा काल नकुल यदि देखी नाशल कालकें सिद्धे पेखी ।
गमन समय मे काक यदि वाम भाग मे देखी ।
यश कार्य सिद्धि होए अगनित धन पुनि लेखी ॥
गमन काल मे यदए बसात विघ्न बाधा सभे नसात ।
सुन्दर शिशु युत युवती नारि भरल कुम्भयुत हो पनिहारि ।
अथवा क्षेमंकरी मृदुभाषी पुस्तक हाथ विप्र गृह वासी ॥
दधि कोकिल पुनि लावा जो मीन, ई सब नहि छथि यात्रा हीन ।
लगहरि गाय विप्रावलि यात्रा, विघ्न दोष सब विसरू पात्रा ।
'डाक' अगजानी ई देखि, शुभ यात्रा कहथि सब लेखि ॥
चलत मार्ग मे तुरग मृग दहिन वाम से जाय ।
'डाक' मनसि चिन्ता तजी धन यश वार्ता पाय ॥
अजा एक अरु श्वान षट् वृषभ एक गज सात ।
तीनि धेनु पञ्च महिस से यात्रा शुभ न लखात ॥
प्रात वाम दिस सिवीर गाजए, पहर दुई तें दाहिन गाजए ।
वचन मानि 'डाक'क यह भाई, गमन करी कुशल सों जाई ॥
बलुआ कारी पक्षी श्वान, गर्दभ गोबर कापस जान ।
वामहि भय 'डाक' जों चलए, धन यश इच्छा तीनु मिलए ॥
मंगलक वया बुधक प्रात, यात्रा करी 'डाक'क बात ।
रवि गुरु मंगल वया जानी, आन सबहिकों पूर्व मानी ॥
मास नक्षत्र जो तिथि वार, जन्म दिन तासक जोहि करी विचार ।
जोड़ल अंक मे सातक भाग, शेष अंक फल कहथि 'डाक' ॥
एक बाँचय तँ शुभ कहि दीअ, दुइ बाँचय तँ लाभ लय लीअ ।

तीनि बाँचय तँ शत्रुके क्षय, चारि काज सिद्ध पाँच संशय ॥
छओ मे मृत्यु शून्य हो दुःख, नौको दिनक बाम्हें नहि सुख ॥
सापक बीअरि स्त्रीक रज, वैद्य मरण देखि यात्रा तज ।
अपन घर जों अहपह जर, छिक हो या पाग खसि पर ॥
कारी बात जों गुर्विणी काम, ई असगुन सब 'डाक' जान ॥
रवि के पान सोम के दर्पन, मंगल किछु किछु धनिया चर्पन ।
बुध मे गुड़ बृहस्पति के राई, शुक्र कहए जे दही सोहाई ॥
शनि कहए मोहि अदरक भाव, सकल कालकें जीति घर आव ।
ने शुनि भदवा ने दिग्शूल, कहथि 'डाक' ई अशुभ समतूल ॥
गामक ठकठक बासक बान, हाथ मुँह दए चिहुका कान ।
साधु सों जों भेटए मसहारी, की होइ राजा की अधिकारी ॥
वामे फनिपति दहिन सिआर दही लएह दहीलएह कहए गोआर ।
लकरी आगों जों भेटए मलाह, देखि मीन करी परम उछाह ॥
की होइ राजा की होइ दीवान, कहहि 'डाक' से परम सुजान ॥
बहदा बनचर भरल सैल, येहवा राजा देवता होल ।
कहहिं 'डाक' यात्रा कक आनि, गेलहुँ लक्ष्मी हेतहु आनि ॥
भरली से खाली भला, जों जल भरने जाय ।
कहहिं 'डाक' सुनू आँधरी', यात्रा अति सुखदाय ॥

ऐतरिक्ष बरबर नवरक बाम्ह विसलाक कोए महतारि काम ।
साधु सँ आगों भेटए जेही, एक पैर नहि आगों पेही ॥ (पत्रान्तर)

कमकट घुचकट काटल केश, घाट चलैत जों लागय ठेस।
केओ पूछए आएब कतए, भेला काज विनाशय ततए॥
खाटक खटखट पुरुषक मान, घाट बैसल जों बुद्धि अकान।
तोंन कोश पर जों भेटए तेलि, विधवा ब्राह्मणी मिलए अकेलि॥
वापर भेटए विप्र जों काना, ब्रह्म टेक धार बचए न प्राना।
नग्न भग्न गुरुविरोधी जोई, खाट फकरिआर जों आगाँ होई॥
सुखे हाकलए रवान जों चाभए, कहहि 'डाक' ई मरण देखाबए।
फुटल पैल ओ टुटल खाट, घाट चलैत ब्यास काटल बाट॥
यात्रामे जों लगए पाग, ई सब ताकथि स्वर्गक बाट॥
खेत भिखारी गाम सराउ, फेरि पलटि अपन घर आउ।
काटल कपचल धकड़ल केश, घाट चलैत जों लागए ठेस॥
वामन मे जों भेटए कान, ब्रह्मलोक धरि बचए न प्रान॥
उजरल बसबह अपबह कोन धाति, दिनमे पूरब पश्चिम राति।
गोधुलि दक्षिण उत्तर ऊषा, कहए 'डाक' ई सुखमसुखा॥

॥ इति यात्रा प्रकरण ॥

—+—

अद्भुत प्रकरण

कमल गाय घोटक गज साप, साकय सुन्दर भूमि पर आप।
खञ्जन पैसल देखी राज, 'डाक' कहथि जे कुशल समाज॥
भस्माह पैसल अरु नखकेश, भुरसहिँ देखि न दुःख कलेश।
ऊपर देखने धनक वृद्धि, पूब कहै छथि कारज सिद्धि॥

अग्नि कोन मे बहुभय होअ, दक्षिण देखने अग्नि बढ़ोअ।
नैऋति देखने झगड़ विशेष, पश्चिम देखने धन अशेष॥
सुन्दर वस्त्र सुगन्धित खल, वायव देखने हैं सम फल।
उत्तर देखने सुन्दरि नारि, ईशहिँ मृत्यु कहहिँ पुकारि॥
एहि विधि चहुँओर बजथ्य जाग 'डिकहुँ' न कह 'डाक' बखान॥
दक्षिन छाँके धन जए छोअए नैऋत कोन सिंहासन दीजए।
पश्चिम छाँके माठ भोजना गेलहुँ पलटए वायव कोना॥
उत्तर छाँके भाग समान सर्व सिद्धि लए कोन ईशान।
पूरब छिका मृत्यु हकार, अग्निकान मे दुःखक भार॥
सपकेर छिका कहि गेल 'डाक', अपने छाकहिँ नहि कह काज।
आकाशक छाँके जे नर जाय, पलटि अन्न मन्दिर नहि खाय॥
कार्यारम्भ मे छींके कोई, सुनकर मन्त्र विचारहु सोई।
माथे पाएरक छाया अपन, अंगुली से गिन लेहु मनेमन॥
ता, मे तेरह आओर मिलाउ, सखन आँठहि भाग लगाउ।
भाग देइकेर शेष जो बाँचए, कहल 'डाक' बाकर फल सोंचए॥
एक बचए तों लाभ बुझावए, कार्य सिद्ध हुइ मोंह जनावए।
तीनि बचए तों होवए हानी, चारि रहए तों शोक बखानी॥
पाँच रहए भयकाँ उपजावए, छओ बचए तों लक्ष्मी आवए।
सात बचए तों दुःखहिँ जाना, शून्य शेष सँ निष्फल माना॥
पदछाया केर इएह विचार, सुन 'भाँइरि' कह 'डाक गोआर'॥
पूछ धामसे छिक्का सुनी, कुशल कार्य सब सिद्धी सुनी।
सन्मुख छींक कलह बढ़ाएब, दाहिन चित्तक लाभ कराएब॥

अपन छीक सबसँ भयकारी, द्रव्य नाश विपत्ति दुखकारी।
सरदी सुंघनी बलक छिक्का, 'डाक' कहथि ई सब फिक्का॥
पक्षी खसए जौं सरटा चढ़ए, एहि विधि फल 'डाक' पढ़ए।
मस्तक खसए जौं राजाओ होइ, भाखहिँ ऐश्वर्य्य कहए सबकोइ॥
कानहि खसने भूषन लाभ, आँखि पर खसने बन्धु मिलाप।
नाकपर खसने सुगन्धि देआएए मुखपर खसने मिष्टान्न खोआएए॥
कण्ठहिँ भी हो बाधाधाइ, बाहु पर खसने विभव बधाइ।
बाहुमूल मे होए समृद्धि, हाथ दुनू पर धन क वृद्धि॥
स्तनमूल मे सुभग भाग, हृदयमे खसनसों सौख्य सोहाग।
पीठपर खसय तौं पृथ्वी प्राप्ति, पाँजरहिँ खसने बन्धु मिलाप्ति॥
डाँड़ पर खसय तौं लाभ होय वस्त्र, गुह्यमे खसने सुखु अवश्य।
जाँघपर खसने धनक हानि, गुदमार्गहिँ रोगभय आनि॥
ऊपर खसय तौं वाहन आय, जानुजघमे धन चल जाय।
पाएर पर खसने रटना होअ, कहथि "डाक" एहिविधि फलहोअ॥
एहि पक्षी चहू नरतन जाय, सरट अपए जौं ओहि विधि आय।
फलहुक अलटा करितहु जानि, "डाक" कहे छथि युक्ति बखानि॥
रातिमे जौं पक्षी चढ़ए, सरटक खसने "डाक" पढ़ए।
मरन निमित्तक होअए साँई, नहि तौं व्याधि अवश्य हाँई॥
खसितहिँ यदि ऊपर चढ़ि जाय, खसने नीक चढ़ए ने सोहाय।
छाया जौं दक्षिण दिश देखो, दुइ शिरछायाक देखने लेखो।
छाया देखी मुण्डविहीन, चन्द्र सूर्य दुइ राशि ओ दीन॥
दुनू बिम्बमे छिद्र देखाय, उदय अस्तमे मुकल आय।

पाँक सौं पङ्कय स्वप्न मे प्रेत, अथवा देखलहु होअह सचेत॥
वज्रपात होय जाहि घर, उल्कापातहु भानह डर।
कज्जल मसय जो वर्षन होय, इन्द्रधनुष जिह्वा देखल जाय॥
अरुन्धती जे देखथि नहिं, माथहि गिद्ध काक बैसू अपनहिं।
देखी जौं ई सब उत्पात, करी पवित्र रोगहि निज गात।
दश सात पाँच पन्द्रह दिन अँटि, 'डाक' तकै कथि दक्षिण बाट॥
देवता ब्राह्मनक पूजा करी, तखी पुण्यें अपनो करी॥
अधिक क्रोध होयब अति डर, से सब वपक पुरितए मर।
अपके मोट वा पातर देह, वर्ष वितैतें यमक गेह॥
देवता पण्डित गुरु ‡भूदेव, माय बाप जौं राजहिं सेव॥
एहि सातोक निन्दा कर, कहए 'डाक' वर्षहिं यमघर॥
दीपगन्ध † अरुन्धती तारा, नहि लागए देखने बेचारा।
'डाक' कहए सुनु 'भौंहरि रानी' आधि यमकघर वर्षहिं मानी॥

जन्म लग्न सँ गेंगल मास, चन्द्रहुँ सँ जनिअह ई बात।
विधवा होइबिह से कुमारि, कहए 'डाक' ई गह विचारि॥
सातम सूर लग्न स जकरा, कहए 'डाक' पति छाड़ए तकरा॥
सातम शनिकें पाप जौं देख, कन्या धरसहु लम्पट वेश॥

‡ भूदेव = ब्राह्मण।

† संस्कृत मूल

दीपनिर्वाणगन्धञ्च सुहृद्वाक्यमरुन्धतीम्।
न विशन्ति च शृण्वन्ति न पश्यन्ति गतायुषः॥

काक चेष्टा विचार—

तनु अति कारी बड़का लोल, पैर काक अति ऊँचे बोल।
ताहि काक कें बामन जान, कहथि 'डाक' जे आन नहि मान॥
पिंगल आँखि नील रङ्ग ठोर, सब देह कारी छत्री सोर।
पांहु नील रङ्ग चोंच जो देह, कहथि 'डाक' जे पैरथ कहि लेह॥
मसमक रङ्ग जो दूबर शरीर, करकर बाजए रह नहि थीर।
ताहि 'डाक' कह शूद्र बुझारि, एहिसँ आन थीक अन्त्यज हारि॥
पाँखो मे मुख बामन जान, असगुन सगुन तकरे आन।
जो मांस बोकरए आगाँ आबि, कहथि 'डाक' जे धन पाबि।
आगाँ लाबय माँटिक ढेप, भूमि लाभ हो कादी खेप॥
रत्न आनि जो राखय आम, कहथि 'डाक' जे राज हो समम।
काक द्वार मे आबय जाय, कहथि 'डाक' जे पाहुन पाय॥
जूता छाता शस्त्र सवारी, छाया अंग नोंचे काग कारी।
स्वामी मृत्यु देखाबय काक, फूल चढ़ोने पूजित हो 'डाक'॥
असमय तीनि दीन सँ ऊपर, जाहि देश वर्षा हो भूपर।
देशक प्रधानक होय मरन, कहथि 'डाक' आब ईशक शरन॥
आब राति जो असमय वृष्टि, ताहि देस मे इन्द्रक दृष्टि।
स्वर्गधाम कें राजा जाय, कहए 'डाक' कए निश्चय भाय॥
असमय परिसय झरझर बादर, सगर मे होय मेघवा कादर।
सकल प्रजागण रोगें पूर, भयक कारणें 'डाक' भेल चूर॥
प्रतिमा हँसए जो मूनै नैन, रोदन करए बाजय बैन।
धूमाँ ऊठए ज्वाला देख, अति भय होय देश मे लेख॥
सकल देव प्रतिमा मे जान, कहथि 'डाक' जे हाय- [illegible]॥

बिन कारण जो अंगक भंग, प्रतिमा चल तनु चामक सङ्ग।
नेत्र सँ नीर जो झुकना जाय, प्रतिमा बाजब सुनलौं आय।
कहए 'डाक' निश्चय भूपाल, देशक राजा मरय जोहि साल॥
कुक्कुर बिड़ारि जो बन जाय, चनक हरिना गाम देखाय।
गगनहि गीध धूमि के आय, भवन भीति बैसय सुख पाबि॥
गदहाक सन मुह नेमाक उपज, बोड़ा भेंड़ा खच्चर आज।
अनेक रूपक मनुष बिजाय, देव प्रतिमा खसल देखाय॥
जाहि देश मे ई सब उतपान, देश छाड़हि कें भागल परान।
कहथि 'डाक' सब करहुँ दुःख, लोके खएतहु लोकक मुख।
कौआक बीचमे कुक्कुर बाज, राति दिन जो इएह समाज।
कहथि 'डाक' सुनु 'भाँडरि रानी'; एहि देशमे भय अति मानी॥
मुख्य घरमे काकगन पएसल, बजितहिँ गिदरा भोरहिँ बएसल।
गगनहि गिद्धक झुण्ड मँड़राय, अति भय 'डाक'कें शीघ्र देखाए॥

गीदर दिन मे बोलदी, काग निसि मे बोल।
कहए 'डाक' पड़ए काल तय, निश्चय घर-घर डोल॥

नेमाक दन्त सम्बन्ध प्रसङ्ग

पहिनहि ऊपर जन्मल दाँत, बापहिँ खएतहु अथवा मात।
दाँत लेने जन्मए बाल, माय बाप जो 'डाक'क काल॥
अपनें खान अपनहुँ नहि बाँच, कहथि "डाक" तो पुनह जाँच।

श्वानचेष्टा विचार

दहिन पाथर सँ श्वान यदि, अग्र निम्न कुड़िआबए।
खदर माथ अरु कण्ठ गुद, सुखद राज्य धन पावए॥

हृदय नासिका कर्ण युग, नेत्र पृष्ठ औ भूमि।
फल सुखदाई हो एकर, "डाक" कहै छथि जूमि॥
वक्र अंग सब वाम पग, ऋजुआयत यदि श्वान।
फल जानी पुनि अपशकुन, "डाक" कहथि परमान॥
श्वान करए क्रन्दन जहाँ लोटए भूमि पर जाए।
"डाक" कहथि निश्चय तहाँ आवए विपदा धाए॥

॥ इति अद्भुत प्रकरण ॥

ग्रहण

रवि से चन्दा सात मे, राहु सँ हो एकन्त।
तखन गहना लागिए, कभी छए खड़ी वसन्त॥
जाहि नखत्रे रवि छपे, तांहि अमावस होए।
किछु किछु पड़िया सचरए, सूर्यपर्व सब होए॥
एक मास जौ दुइ गहन, घोर युद्ध भूपति कें तखन।
जलवर्षा नहि होवए साल, "डाक" कहैछथि सुनू भूपाल।
पहिले सूरज पाँछा चन्द, गरहन लगलें "डाक" अनन्द।
पहिले चन्दा पाँछा सूर, गरहन देखलें रोगे पूर॥
गृहपति धरनी कलह घोर, कहए "डाक" सुनू कहल मोर॥

प्रश्न प्रकरण

पुछनिहार जोताक नामाक्षर, तिथि दिन मास नक्षत्र एक कर।
राशिक सुहँ भाग कए, शेष अंक सौं फल उचारू॥

सात पाँच तीनि मंगल भाख, नओ एक सिद्धि होये हाथ।
छओ चारि मे कार्य विफल, दुइ आठ नाशें काज सकल॥
प्रश्नकर्ताक नाम जत अक्षर, जसवा मात्रा फराक कय धर।
अक्षर दोगुन चौगुन मात्रा, सब मिलाय करी एकत्रा॥
तीनि अङ्क सौं भाग कए देख, शेष बाँचए फलक लेख।
एके शीर्षे दुइ फल मे देर, शून्ये नाशें "डाक"क फेर॥
जत मास गर्भ जानिकें नाम, जत जन पैसल छथि ओहि ठाम।
ओहि अक्षर सब हो जत अंक, साते हरने बाँचए जे निटंक॥
'डाक' कहए एक दुइ औ पाँच, बाँचए पुत्र करबिआह नाच।
एहि सँ आन जौ बाँचए आनि, कन्या देखलें बड़ सुख पानि॥
नाम नाम औ गुणिवर्णा, नाम अक्षर एक फल।
"डाक" जोड़ै छथि एक कय, तीनि भाग जे बाँचल॥
एक पूत दुइ कन्याक आस, शून्य पाँच सौं गर्भक नाश।
प्रश्न फल जो उलटा देखी, स्वामीक गर्भ मे संशय लेखी॥
अक्षर दोगुण चौगुन मात्रा, नामे नामे करी एकत्रा।
तीन अंक सौं भाग करी, भाग शेष सौं उत्तर भरी॥
एक शून्ये पहिलें पाँच, दुइ रहय तँ जाय युवति।

वनस्पति प्रकरण

वृक्ष रोपनाक

का 'डाक' सौं सुनह रावन, केरा रोपी अषाढ़ सावन।
सौ सए साठि जे केरा रोपए, आवि निचिन्त घरहि भए सुतए॥

केरा रोपी काटी नहि धान, केरे देतहु बोती आन।
फागुन केरा रोपल जाय, मास मास फल बैसल खाए॥
फागुन केरा ई चुत चैत, कातिक ओन कहि तार।
तीनि बिलसे तेरह हत्ये, तीनि मासे तीनि दिने॥
भादव भदमा सीमी बारि, केरा रोपी दिन बिचारि॥
जौं नहि बरिसए अगहन मेघ, कटहर गाछ कैं होए बेघ।
कहथि 'डाक' जौं होए पानि, टुटल ठारि कह गाछ कानि॥
गूआ गोबर बाँसहिं साँटि, बाँक मारिकेरि सिक्कठि काटि।
ओलमे कुरकुट छोंहिं मान, बढ़ए फलए ई "डाक"क गान॥
डुमरी पीपरि पाकहि बढ़, असमय फूलए देखि बढ़।

विविध प्रसङ्ग

बाभन कुत्ता हाथि, तीनू जातिमहिं साथि।
कायथ कौआ रोड़, तीनू जाति बटोर॥
सए मे एक सहस्र मे काना, सवा लाख से इँचा साना॥
इँचा साना कहए पुकारि, हम मानल कुइरा सँ हारि॥
खिचड़ी सङ्ग जे मछरी खाए, मुइला बहुक नैहर जाए।
बाट चलैत जे गावए गीत, कहए 'डाक' ई तीनू पतीत॥
बाती ठकनहि भाथ बिले, कहिगेल 'डाक गुआर'।
चैत दुए तीनि सए ओए, कहहिं 'डाक' रौदी होए॥
दिनमे बदरा रातिमे जिबदर, बह पुरबा हबर हबर।
कहहिं 'डाक' बिआ जनु खोअह, धानक खेतमे राहहि बोअह॥

प्रकीर्णाध्याय

बड़द कीनबाक प्रसङ्ग

बएल कीनए जाइह कन्ता, बएल गोल के न देखह दन्ता।
चरक कसौटी सउरा धान, एहि छाड़ी जनु किनह आन॥
आँहि पार मे देखिअह मैना, एहि पार सँ फेकिअह बैना॥
तीनह पंखी बादरा, बिधवा कजल रेख।
ओ घर करए, ई बरिसए एहि मे मीन न मेष॥
रानि रवि फरकी मङ्गल खाट, ई सभ ताकए स्वर्गक बाट।
साठी उपजय साठि दिना, जौं मेघ बरिसय राति दिना॥
धनमे धान आओर धन गाय, किछु किछु सोना आओर सब छाय।
बरदा बहए तँ अपनहुँ बही, नहि बहि होए तँ बैसलो रही।
जे कहए हर बहए कहाँ, कहथि 'डाक' घंटो नहि तहाँ॥
हर बहए जं सङ्ग सङ्ग बही॥
निज्ह खेती दोसरहि गाय, जे नहि देखए तकरहि जाए॥
काँची कुची बेश्या पालए, ब्राह्मण पालए दासी॥
..... घोरहि पालह उकासी॥
मोड़ इतमान जे करए, तिल उठि हरबा खाहिं।
दुष सलाका जे पिबए, ता घर बैद न जाँहिं॥
खापक मूती सूती बाप, बैद अनएबाक कोनो ने काम।

—सत्तरि—

महतो सँ बहिया भेल घरी, कहए 'डाक' रुस्तापहि भरी ॥
पछवा सँ उघइए मेघ, विधवा करय सिंगार।
जो कहइए जो घरिसए, कहि गेल 'डाक सुभार' ॥

वर्ग विचार—

अ इ उ ए गरुड़; क ख ग घ गजार।
च छ ज झ सिंह; ट ठ ड ढ स्यार।
त थ द ध नाग; प फ ब भ मूस।
य र ल व हाथी; श ष स ह मेष ॥

योगिनी विचार—

एकी पक्ष खम्भा दोआ, नवे नवे योगीन होआ ॥

—:o:—

Library
22451

शब्दार्थ-संग्रह

(अ) अचके—अकस्मात्
अज—बकरी
अवरण—आवरण
अनु—अनुराधा नक्षत्र
अभिजित्—नक्षत्रविशेष
अलि—बृश्चिक
अहिवर्णपक्षक — अहिवर्ण
भरणी, शिखा,
रोहिणी, मृगशिरा
अहितर—अहिस्वर—गायन,
स्वर संख्या ७ =
(आ) आठ—अष्टमीतिथि
(इ) इन्दु,द—मूषिक कल विशेष।
इन्दुवर—मूसकस्वर एक—१
संख्या।
इन्द्र—पूर्वदिशा
(ई) ईशा—स्वामी,
(ए) एगारह—एकादशी तिथि
एकुशाला—११-३,-५-७ तिथि
(क) कंकोड़ाबान—कंकण
कटिबंदी—छटपट
कलस—कुम्भराशि
कमल—कमला
कपोत—कबीला
कान—शूद्र
काना—कन्या
कोर—गुम्बद
कुजा—कन्यालग्न
केसरि—सिंहराशि
क्षिप्र—शीघ्र
क्षिप्र—नक्षत्रक संज्ञा विशेष
योग—कल्याण
(ख) खोड़—टक्कर
(ग) गज—हाथी
गजस्वर—हाथीकस्वर, ३ संख्या।
गरुना—गरुड़
गलग्रह—एक प्रसिद्ध योग
(घ) घर—कुम्भराशि